IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

बी.एड. इन्टर्नशिप की वस्तुस्थिति के अध्ययन में शोध उपकरण की भूमिका

शिवानी भोजक (शोधार्थी)

जैन विश्वभारती संस्थान

(मान्य विश्वविद्यालय लाडनूँ, नागौर)

किसी भी राष्ट्र की प्रगति उसके अध्यापकों की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। यही कारण है कि अध्यापक को सर्वोत्तम व्यवसाय की संज्ञा दी जाती है। वर्तमान में इन्टर्नशिप कार्यक्रम भावी शिक्षकों को एक ओर स्व अधिगम, स्व–ज्ञान, रचनात्मक दृष्टिकोण तथा शिक्षण के अभ्यास के साथ शैक्षिक सिद्धान्त और शैक्षणिक अवधारणाओं को जोड़ने का अवसर प्रदान करता है तथा दूसरी तरफ वास्तविक स्कूल परिस्थितियों में सैद्धान्तिक प्रस्तावों की वैद्यता का अवसर भी प्रदान करता है। इन्टर्नशिप कार्यक्रम को शिक्षक–प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में एक निश्चित समयावधि के अनुसार रखा गया है जिसमें प्रत्येक बी.एड. कर रहे प्रशिक्षुओं को इन्टर्नशिप के लिए सरकारी विद्यालयों में जाना होता है। इर्न्टनशिप कार्यक्रम में कौनसे आयाम सम्मिलित किए गए है ? शिक्षक–प्रशिक्षण में इन्टर्नशिप की भूमिका क्या है? इन्टर्नशिप का प्रभाव प्रशिक्षुओं तथा विद्यालयों पर क्या परिलक्षित हो रहे है? इन्टर्नशिप के दौरान क्या समस्याएँ परिलक्षित हो रही है? इन सभी को समझने का प्रयास प्रस्तुत लेख में किया गया है।

मुख्य शब्दः– इन्टर्नशिप, अनुसंधान, शिक्षक–प्रशिक्षण, अनुभवात्मक अधिगम, वस्तुस्थिति, उपकरण।

प्रस्तावना :–

शिक्षा वास्तव में एक ज्ञानोन्मुक्त प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक मानव की छिपी हुई शक्तियों को विकसित और उजागर किया जाता है। उसमें नये ज्ञान, कुशलताओं, मूल्यों, आदर्शों आदि को सिखाया जाता है जिससे कि वह अपने वातावरण पर अधिकार पा सके, समाज में अपना सही स्थान प्राप्त कर सके और मानव जीवन के लक्ष्यों को प्राप्त कर सके।

शिक्षक–प्रशिक्षण : शिक्षक–प्रशिक्षण जो अभी तक सैद्धान्तिक प्रवृति पर आधारित था, वर्तमान में वह 'इन्टर्नशिप कार्यक्रम' के माध्यम से प्रायोगिक हो गया है, जो शिक्षक–प्रशिक्षकों को वास्तविक वातावरण में शिक्षण करने की स्थितियाँ प्रदान करता है। इन्टर्नशिप कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य प्रशिक्षुओं में शिक्षण व्यवसाय के प्रति प्रतिबद्धता, क्षमता, जवाबदेही, कर्तव्य परायणता का विकास करना होता है।

इन्टर्नशिप का अर्थः उद्देश्यपरक शिक्षण कैसे किया जाए और विद्यार्थी को वांछित अधिगम के लिए कैसे प्रेरित किया जाए के साथ शिक्षक प्रशिक्षणार्थी के लिए यह जानना भी अत्यन्त आवश्यक है कि विद्यालयी जीवन में होने वाली अन्य विभिन्न गतिविधियों का सफल संचालन कैसे किया जाए। शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों को विद्यालयी जीवन में होने वाले विभिन्न क्रियाकलापों, गतिविधियों व उत्तरदायित्वों को समझने, सीखने व प्रशिक्षण प्रदान करने की व्यवस्था का नाम है 'इन्टर्नशिप'। इन्टर्नशिप की व्यवस्था इस अवधारणा पर आधारित है कि जीवन के वास्तविक अनुभव वास्तविक परिस्थितियों से ही प्राप्त होते है।

अनुभवात्मक अधिगमः इन्टर्नशिप का अर्थ किसी समर्थवान पर्यवेक्षक के निर्देशन में व्यावहारिक ज्ञान व अनुभव प्राप्त करने को समाहित करता है। जिसमें विद्यार्थी अपने सैद्धान्तिक ज्ञान का जिसे उसने कक्षाओं में सीखा है, उसका परीक्षण करता है। प्रशिक्षुता में वे सभी महत्वपूर्ण अनुभव सम्मिलित हैं जो वास्तविक कार्यक्षेत्र में विद्यार्थी द्वारा प्राप्त किये जाते है। यह कार्यक्रम सार्थक कौशलों के विकास के साथ–साथ विद्यार्थियों से सम्बंधित व्यवसाय के प्रति संवेदनशीलता एवं विशिष्ट अभिवृत्ति का भी विकास करता है। प्रशिक्षुता कार्यक्रम प्रशिक्षुओं के लिए एक उपयोगी तथा लाभदायक घटक है। प्रशिक्षु सीखने की अवस्था के रूप में होता है तथा जो ज्ञान विद्यार्थी सीख रहा है उसी ज्ञान को वह कार्यस्थल पर जाकर लागू करता है। इन्टर्नशिप कार्यक्रम अनुभवात्मक अधिगम का एक रूप है जो प्रशिक्षुओ द्वारा अभ्यासित ज्ञान व कौशल का वास्तविक कार्य क्षेत्रों के वास्तविक क्षेत्र में उपयोग एवं विकास समाहित करता है।

इन्टर्नशिप कार्यक्रम का उद्देश्यः इन्टर्नशिप कार्यक्रम का उद्देश्य छात्र को सार्थक अनुभव के अंतर्गत एक प्रशिक्षु के रूप में अवसर प्रदान करना हैं। अतः इन्टर्नशिप कार्यक्रम की संरचना ऐसी होनी चाहिए जिससे प्रशिक्षु एक नियमित शिक्षक के रूप में कार्य करते हुए विद्यालयी क्रियाकलापों से पूर्ण रूप से अवगत हो जाय। इसके साथ ही साथ एक प्रशिक्षु की भूमिका रचनात्मक व्यक्तित्व के रूप में परिवर्तित हो सके। अतः प्रशिक्षुओं को विद्यालय में आवश्यक भौतिक एवं शिक्षा शास्त्रीय स्वतंत्रता उपलब्ध करायी जानी चाहिए जिससे कि नवाचार करने के लिए पर्याप्त अवसर मिल सके। इसलिए यह आवश्यक है कि विद्यालयी हितों को ध्यान में रखते हुए सर्व सम्मति और साझेदारी में इस प्रकार का इन्टर्नशिप आदर्श प्रस्तावित किया जाए जिससे शिक्षण क्रिया का संवर्द्धन हो सके। इन्टर्नशिप कार्यक्रम का उद्देश्य प्रशिक्षुओं में विद्यार्थियों को समझने की क्षमता, कक्षा–कक्ष की क्रियाओं, सैद्धान्तिक/प्रायोगिक शिक्षा–शास्त्रीय समझ, विद्यालयी नीतियों एवं कौशलों, विद्यालयी वातावरण के विभिन्न पक्षों का आधारभूत ज्ञान एकत्रित कर विकसित करना है। जैसे विद्यालयी वातावरण, बच्चों को समझने की क्षमता, शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया, शैक्षिक नवाचारों आदि से अवगत कराना है।

द्वि–वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम में आधारभूत ज्ञान आधारित विषयों के अन्तर्गत नवीन विषयों को जोड़ा गया तथा आवश्यक व्यावसायिक दक्षताओं के विकास पर भी प्रमुख रूप से बल दिया गया है। साथ ही इसमें प्रशिक्षुता (इन्टर्नशिप) को समाहित किया गया है। जिसके माध्यम से प्रशिक्षणार्थियों को कार्यक्षेत्र संबंधी वास्तविक अनुभव प्रदान करने साथ–साथ सैद्धान्तिक एवं प्रयोगात्मक पक्ष को विकसित करने का प्रयास भी किया गया है।

समयावधिः प्रशिक्षुता कार्यक्रम को द्वि–वर्षीय पाठ्यक्रम में एक निश्चित समयावधि के अनुसार रखा गया है। जो बी.एड. प्रथम वर्ष में 24 कार्य दिवस तथा बी.एड. द्वितीय वर्ष में 96 कार्य दिवस है। प्रशिक्षुता के लिए बी.एड. कर रहे प्रत्येक विद्यार्थी–शिक्षक को सरकारी विद्यालयों में जाना होता है। ये विद्यालय उच्च प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च माध्यमिक स्तर के होते है।

हमारे शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों की वर्तमान स्थिति के बारे में यदि हम गौर से अध्ययन करते है तो एक प्रश्न हमारे मस्तिष्क में उठता है कि क्या हमारें इन्टर्नशिप कार्यक्रम के अन्तर्गत ये सभी प्रकार के आयामों को सम्मिलित किया गया है? क्या हमारे प्रशिक्षु स्कूल की सभी गतिविधियों में पूर्ण रूप से भाग लेते है? क्या सभी शिक्षक–प्रशिक्षणार्थी सम्पूर्ण इन्टर्नशिप कार्यक्रम को पूरी निष्ठा व ईमानदारी से पूर्ण करके उनका मूल्यांकन करते है? अध्यापक–शिक्षकों, प्रशिक्षुओं तथा विद्यालयी शिक्षकों को प्रशिक्षुता के दौरान कौनसी समस्याएँ सामने आ रही है। इन सभी को ध्यान में रखकर इस ससमस्या पर अध्ययन करना समीचीन प्रतीत हुआ।

अनुसंधान एक बौद्धिक प्रक्रिया है जिसमें किसी प्रत्यय का क्रमबद्ध अध्ययन किया जाता है जो वैज्ञानिक उपकरणों द्वारा सुनियोजित योजना के अनुसार किया जाता है जिससे प्रत्यय से संबंधित परिवर्तियों के पारस्परिक सम्बंधों का स्पष्टीकरण होता है। पी.एम. कुक. के अनुसार :– ''अनुसंधान किसी समस्या के प्रति ईमानदारी एवं व्यापक रूप से समझदारी के साथ की गई खोज है, जिसमें तथ्यों, सिद्धान्तों तथा अर्थो की जानकारी की जाती हैं।'' अनुसंधान की उपलब्धि तथा निष्कर्ष प्रामाणिक तथा दृष्टिगोचर होते है जिससे ज्ञान में वृद्धि होती है।

अनुसंधान प्रक्रिया में अनुसंधानकर्ता सर्वप्रथम अनुसंधान के क्षेत्र का चयन करता है। अपनी समस्या को चिन्हित करता है तथा उसे परिभाषित करता है, वह समस्या से सबंधित अद्यतन ज्ञान से परिचित होने के लिए साहित्य की समीक्षा करता है, चयनित समस्या के समाधान हेतु उपयुक्त परिकल्पनाएँ बनाता है और अपने अध्ययन के विशिष्ट उद्देश्य को निर्धारित करता है, अपनी अनुसंधान योजना तैयार करता है और उसके अनुरूप

समस्या पर क्रियात्मक कार्य प्रारम्भ कर देता है। नियोजन प्रक्रिया में अपनी समस्या की प्रकृति के अनुरूप उसे यह निश्चित करना होता है कि वह अपनी समस्या के समाधान के लिए उपयुक्त विधि का चयन करे।

अनुसंधान की सफलता उसकी योजना व अध्ययन विधि पर आधारित होती है। शोध विधियाँ तथा उपकरण जितने अधिक गइराई से संबंधित होंगे, समस्या के विश्लेषण से उतने ही अधिक वैद्य तथा विश्वसनीय निष्कर्ष निकलेंगे।

अनुसंधान के उपकरण

अनुसंधान एक बौद्धिक प्रक्रिया है जो नये ज्ञान को प्रकाश में लाती है तथा पुरानी त्रुटियों और भ्रान्त धारणाओं का परिमार्जन करके वर्तमान ज्ञान कोश में वृद्धि करती है। अनुसंधान की प्रक्रिया में अनुसंधान का क्षेत्र तथा समस्या का निर्धारण तथा तत्संबंधी परिकल्पना के निर्माण के उपरान्त शोधकर्त्री के समक्ष यह समस्या उत्पन्न होती है कि वह परिकल्पना के परीक्षण के लिए आँकड़ों का संग्रह किस विधि से तथा किस उपकरणों से करें? अनुसंधानकर्ता समस्या एवं परिकल्पना की प्रकृति को ध्यान में रखकर उपलब्ध विधियों तथा उपलब्ध उपकरणों का विश्लेषण करके उपयुक्त उपकरण का चुनाव कर लेता है।

नवीन ज्ञान के क्षेत्र में तथ्यों का संकलन करने में सहायक साधनों को शोध उपकरण कहते है। रहस्यों का उद्‌घाटन करने एवं तथ्यों का पता लगाने के लिए उपयुक्त साधनों का प्रयोग आवश्यक है। विभिन्न प्रकार के तथ्य या आँकड़े एकत्र करने के लिए भिन्न–भिन्न प्रकार के उपकरण अपेक्षित होते हैं। जो उपकरण एक क्षेत्र में प्रभावी तथा उपयोगी हो सकता है। सभी क्षेत्रों में उपयोगी हो यह आवश्यक नहीं है। अतः क्षेत्र तथा समस्या के अनुकूल उपकरण काम में लाए जाते है।

उपकरण का चयन करते समय ध्यान देने योग्य तथ्य

(1) उपकरण की वस्तुनिष्ठता
(2) उपकरण की विश्वसनीयता
(3) उपकरण की वेद्यता
(4) उपकरण का विभेदीकरण
(5) उपकरण की व्यापकता
(6) प्रमापीकृत उपकरण
(6) उपकरण द्वारा उद्देश्य को पूरा करना

शोध उपकरण :

प्रस्तुत शोध पूर्ति हेतु शोधकर्त्री द्वारा स्वनिर्मित उपकरणों का प्रयोग किया गया है। इस शोध कार्य हेतु आंकिक रेटिंग स्केल का प्रयोग किया गया है। इस प्रकार की मापनी में प्रयोज्य के सामने पूर्व विश्लेषित अंको की तालिका प्रस्तुत की जाती है तथा उससे यह कहा जाता है कि वह अपने निर्णय को इस प्रस्तुत अंक तालिका के आधार पर उचित अंक प्रदान करे। यहाँ अंक तालिका से अभिप्राय पॉइण्ट स्केल से है। प्रस्तुत शोध में पाँच पॉइण्ट रेटिंग स्केल का प्रयोग किया गया है।

इस विधि में चूँकि प्रत्येक प्रश्न के सामने बिंदु मापनी लगी होती है। अतः किसी समस्या के संबंध में संक्षिप्त किन्तु ठोस उत्तर प्राप्त होता है। अतः विश्वसनीय परिणाम ही नहीं प्राप्त होते अपितु तुलनात्मक अध्ययन भी सरल हो जाता है।

शोध की आवश्यकतानुसार प्रस्तुत शोध कार्य में डाटा संग्रह हेतु तीन प्रकार की प्रत्यक्षीकरण मापनियों का प्रयोग किया गया है :–

(1) शिक्षक–प्रशिक्षकों हेतु इन्टर्नशिप प्रत्यक्षीकरण मापनी
(2) प्रशिक्षुओं हेतु इन्टर्नशिप प्रत्यक्षीकरण मापनी
(3) सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों हेतु प्रत्यक्षीकरण मापनी

शोधकर्त्री द्वारा प्रस्तुत शोध कार्य में स्वनिर्मित प्रत्यक्षीकरण मापनियों का प्रयोग किया गया है। मापनियों के अन्तर्गत सकारात्मक तथा नकारात्मक विचारों के आधार पर प्रत्येक मापनी में 50 कथनों का निर्माण किया गया है। मापनियों के अंदर कुछ कथन सकारात्मक प्रकृति के है तथा कुछ कथन नकारात्मक प्रकृति के है। कथनों के सामने 5 विकल्प दिए गए है।

1. पूर्णतः सहमत 2. सहमत 3. अनिश्चित 4. असहमत 5. पूर्णतः असहमत

मापनियों के कथनों के अंकन हेतु निम्न पद्धति अपनाई जाएगी।

	पूर्णतः सहमत	**सहमत**	**अनिश्चित**	**असहमत**	**पूर्णतः असहमत**
सकारात्मक कथन	5 अंक	4 अंक	3 अंक	2 अंक	1 अंक
नकारात्मक कथन	1 अंक	2 अंक	3 अंक	4 अंक	5 अंक

उपकरणों का प्रशासन

राजस्थान राज्य के दो सरकारी विश्वविद्यालयों, राजस्थान विश्वविद्यालय तथा बीकानेर विश्वविद्यालय, दो गैर–सरकारी विश्वविद्यालयों, सुरेश ज्ञान विहार विश्वविद्यालय जयपुर तथा महात्मा ज्योतिरा फूले विश्वविद्यालय, जयपुर तथा दो सम विश्वविद्यालयों, IASE समविश्वविद्यालय सरदार शहर, चुरू तथा जैन विश्व भारती संस्थान लाडनूँ (नागोर) के 60 प्राध्यापकों तथा 350 प्रशिक्षुओं का चयन यादृच्छिक तथा सौद्देश्य विधि द्वारा किया गया। इन विश्वविद्यालयों के प्राध्यापकों द्वारा शिक्षक प्रशिक्षकों हेतु इन्टर्नशिप प्रत्यक्षीकरण मापनी को भरवाया गया तथा प्रशिक्षुओं हेतु इन्टर्नशिप प्रत्यक्षीकरण मापनी को भरवाया गया। प्रशिक्षुओं को आवंटित सरकारी विद्यालयों के 60 शिक्षकगणों का चयन भी किया गया तथा उनके द्वारा सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों हेतु प्रत्यक्षीकरण मापनी को भरवाया गया। उपकरणों का प्रशासन online तथा प्रत्यक्ष रूप से भरवाकर दोनो माध्यमों से किया गया।

इन्टर्नशिप कार्यक्रम के दौरान प्रशिक्षुओं के शिक्षण कार्य की वस्तु स्थिति जो कि शिक्षण संस्थान एवं प्रशिक्षणार्थियों में अवलोकित की गई है :–

1. प्रशिक्षु प्रतिदिन विद्यालय तो जाते है किन्तु उनकी रूचि व भूमिका विद्यालयों में कम पायी गयी।
2. प्रशिक्षणार्थियों के शिक्षण अभ्यास के दौरान निरीक्षक अध्यापकों द्वारा उनका निरीक्षण अत्यन्त अल्प करना पाया गया।
3. विद्यालय के प्रधानाचार्य द्वारा विद्यालय के मूल्यांकन तथा परीक्षा परिणामों संबंधी कार्य में प्रशिक्षणार्थियों को संलग्न करना पाया गया।
4. अधिकांश प्रशिक्षणार्थी वास्तविक मूल्यांकन प्रक्रिया को नहीं अपनाते तथा बिना नील पत्र के इकाई परख लेते हुए पाए गए।
5. अधिकांश प्रशिक्षणार्थियों द्वारा पाठ योजना का निर्माण तो किया गया लेकिन उसे अपने प्रशिक्षक के द्वारा जांच नहीं करवाया गया।
6. शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों द्वारा किसी भी प्रकार की दैनिक डायरी जो प्रतिदिन सूचनाओं से संबंधित हो निर्मित करने में कोताही बरती जाती है।
7. प्रशिक्षुओं को इन्टर्नशिप हेतु विद्यालय का आवंटन घर से बहुत दूर होने के कारण आर्थिक तथा शारीरिक परेशानियों का सामना भी करना पड़ता है।
8. इन्टर्नशिप के दौरान करवाई जाने वाली पाठ्य–सहगामी क्रियाओं को महत्व नहीं दिया जा रहा जिससे प्रशिक्षु वास्तविक अनुभव से वंचित रह जाते है।

9. महाविद्यालयों द्वारा विद्यालयों को स्पष्ट निर्देश ना दिए जाने के कारण उनके द्वारा दिए गए कार्य भार में स्पष्टता का अभाव होता है।
10. अधिकांश प्रशिक्षार्थी इसे महज एक खानापूर्ति के रूप में पूर्ण करते है।

इन्टर्नशिप कार्यक्रम को प्रभावी रूप से क्रियान्वित करने हेतु सुझाव :

1. यथासंभव नवाचारों के प्रोत्साहन हेतु प्रशिक्षुओं द्वारा नवीन पद्धतियों का निर्माण किया जाए जिससे शिक्षण अधिगम प्रक्रिया प्रभावी हो सके।
2. प्रशिक्षुओं में प्रबंधकीय कौशलों का विकास संबंधी क्रियाकलापों का समावेशन इन्टर्नशिप कार्यक्रम में होना चाहिए।
3. प्रशिक्षुओं द्वारा अपने विद्यालयों के साथ ही अन्य विद्यालयों का भी भ्रमण करवाना चाहिए जिससे वे अधिक अनुभवों को प्राप्त कर सके।
4. इन्टर्नशिप कार्यक्रम का संचालन करने वाले विद्यालयों में नवीन संसाधनों की व्यवस्था भी की जानी चाहिए जिनका प्रयोग करके शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी बनाया जा सके।
5. पाठ–योजनाओं के निर्माण एवं नियोजन में विभिन्न कक्षागत पहलुओं का समालोचनात्मक समावेशीकरण हो जिससे पाठ्य–पुस्तकों के साथ–साथ अन्य पाठ्य सामग्री का प्रयोग किया जा सके।
6. प्रश्न–पत्रों का निर्माण अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन को ध्यान में रखते हुए किया जाए जिससे शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में अपेक्षित सुधार लाया जा सके।
7. विद्यालय के विषय अध्यापकों द्वारा प्रशिक्षुओं के मूल्यांकन के साथ ही उन्हें सामान्य व विषय आधारित पर्यवेक्षण प्रदान करने में भी सहयोग किया जाना चाहिए।
8. प्रशिक्षुओं से भी यह अपेक्षा की जाती है कि वे सभी उपयुक्त क्रियाकलापों का चयन तथा निर्माण करते हुए पाठ योजना व इकाई को विकसित करें।
9. प्रशिक्षुओं द्वारा एक दैननन्दिनी अद्यतन की जानी चाहिए जिसमें उनके द्वारा किए गए समस्त क्रियाकलाप प्रतिबिम्बित हो।
10. प्रशिक्षुओं को विद्यालय का आवंटन यथा सम्भव उनके घर के समीप किया जाना चाहिए जिससे उन्हें विद्यालय में उपस्थित होने में किसी भी प्रकार की परेशानी ना उठानी पड़े
11. प्रशिक्षुओं को आर्थिक सहायता के रूप में वृत्ति (stipend) प्रदान की जानी चाहिये।

निष्कर्षः शिक्षक शिक्षा में इन्टर्नशिप कार्यक्रम अति महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है। अतः इस कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु सभी के द्वारा यथासंभव अथक प्रयास करने होंगे जिससे यह कार्यक्रम सभी के लिए लाभदायी सिद्ध होगा। यह एक प्रशिक्षण कार्यक्रम की खानापूर्ति नहीं होकर वास्तविक रूप में एक अच्छा शिक्षक बनने की प्रक्रिया का चरण साबित होना चाहिए। हमें कुछ ऐसी प्रभावी नीतियों व सुझावों की महती आवश्यकता है जिसके द्वारा इर्न्टनशिप कार्यक्रम को प्रभावी बनाया जा सके ताकि इन्टर्नशिप कार्यक्रम वास्तविक परिस्थितियों में शिक्षण क्रिया को प्रभावी बना सके।